Contemporary India-- 10

वेतन और उपहारों के रूप में भारत से इंग्लैंड तक धन का निकास :-

सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारी आम तौर पर इंग्लैंड लौट जाते थे lekin भारत सरकार को उन्हें पेंशन का भुगतान करना पड़ा। नौकरीपेशा अंग्रेज अपने परिवारों को पैसे भेजते थे जो इंग्लैंड में रहते थे। भारतीय राजाओं द्वारा अंग्रेज अधिकारियों को दिया जाने वाला चढ़ावा भी भेजा जाता था ईस्ट इंडिया कंपनी के वर्णन से यह भी स्पष्ट होता है कि वे बंदरगाह से कलकत्ता से इंग्लैंड को भारी मात्रा में हीरे और मोतियों का निर्यात किया जाता था। इसके अलावा ईस्ट इंडिया कंपनी के मुनाफ़े के बीच अंग्रेज़ों ने लगभग 60 लाख पाउंड भी ब्रिटेन भेजे 1758 से 65 के दौरान। प्लासी के युद्ध के बाद स्थिति और भी गंभीर हो गई , और अंग्रेजों ने भारत की अर्थव्यवस्था पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया।

विशाल ब्रिटिश सार्वजनिक ऋण के लिए भारतीयों द्वारा ब्याज का भुगतान :-

ईस्ट इंडिया कंपनी ने कई युद्धों में भाग लिया था जिसके लिए उसने सार्वजनिक ऋण जुटाया था वर्ष 1900 तक सार्वजनिक ऋण की राशि 22 करोड़ 40 लाख पाउंड तक पहुँच गयी। कुछ अंग्रेज विद्वानों का मत है कि इस सार्वजनिक ऋण का एक बड़ा भाग विकास पर खर्च किया गया (रेलवे और कृषि आदि पर), अतः अधिकांश व्यय भारत के हित में किया गया ।लेकिन असल में ऐसा नहीं था. वस्तुतः रेलवे एवं सिंचाई योजनाओं का विकास पुरी तरह से अंग्रेजों के हित में था क्योंकि अंग्रेजों ने देश का व्यापार और वाणिज्य पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था , लेकिन भारत को इस विशाल सार्वजनिक ऋण पर ब्याज का भुगतान करना पड़ा। दादाभाई नौरोजी ने एक बार टिप्पणी की थी कि यह एक महान षड्यंत्र था। भारत का पैसा ब्याज के रूप में विदेश भेजा जाता था और वही पुनः जनता को कर्ज रूप में भारत को उधार दिया जाता था । इसके अलावा, इंग्लैंड में नागरिक और सैन्य प्रभार, स्टोर खरीद और विदेशी धन पर ब्याज, पूंजी निवेश, सब भारत सरकार को पूरा करना था क्योंकि भारत विदेशी चंगुल में फंस गया था ।इस प्रकार, भारत का धन विभिन्न रूपों में इंग्लैंड भेजा जा रहा था। भारत की अर्थव्यवस्था को इसने चकनाचूर कर दिया (बहुत ख़राब)। भारत की धन-संपदा का निष्कासन इसका एक प्रमुख कारण था ।

इन विरासतों के अलावा, ब्रिटिश शासन निम्नलिखित बड़े कारणों का भी स्रोत रहा है

* आधुनिक भारतीय आर्थिक व्यवस्था पर प्रतिबंध

A भारत का आर्थिक शोषण :

ब्रिटिश शासकों द्वारा हर संभव तरीके से भारत का आर्थिक शोषण किया गया। आत्मनिर्भर भारत का बड़े पैमाने पर अकाल और बीमारी से ग्रस्त देश में परिवर्तन गरीबी, बेरोजगारी और व्यापक आर्थिक असमानताएं ब्रिटिश विरासत की रही हैं, जो आजादी के इतने वर्ष बाद भी भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की क्षमताओं पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है ।

B भारत में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का परिचय :

अंग्रेजों ने भारत में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था लागू की और ग्रामीण भारत में सामंतवाद को कायम रखा ।जिसके फल स्वरुप भारत अभी भी समाजवादी लक्ष्यों और ग्रामीण विकास को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा है। भारत का निर्यात और आयात के लिए पश्चिम पर निरंतर निर्भरता भी अंग्रेजी विरासत के कारण है।

C भारत पर पश्चिम का नव-औपनिवेशिक नियंत्रण :

अर्थव्यवस्था, आर्थिक नीतियों आदि पर पश्चिम का नव-औपनिवेशिक नियंत्रण रहा। ये कारक भारत की राजनीतिक नीतियों पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद की विरासत को भी उजागर करते हैं।

D भारत एक बाज़ार के रूप में :

कच्चे माल की खरीद के लिए भारत को बाज़ार के रूप में उपयोग करने की ब्रिटिश नीति तथा तैयार माल की बिक्री ने भारत में औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण को रोक दिया। भारतीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक विकास, व्यापार और उद्योग और यहाँ तक कि कृषि भी पूर्णतः विकसित थी पर उन्होंने अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए बाजार को नियंत्रित, उपयोग और अधीन किया । इसका परिणाम भारत का औद्योगिक, तकनीकी और आर्थिक पिछड़ापन रहा। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने औद्योगिक, तकनीकी और सुरक्षित करने के लिए कई बड़े कदम उठाए ।

Cont...